एम.एच.डी.-14
हिन्दी उपन्यास-1
(प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
सत्रीय कार्य
(खंड 1 से 5 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी. - 14
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-14/टीएमए/2020-2021
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : $10 \times 4 = 40$

(क) जब हम गृहस्थ–आश्रम में प्रवेश करते हैं, जब हमारे पैरों में धर्म की बेड़ी पड़ती है, जब हम सांसारिक कर्त्तव्य के सामने अपने सिर को झुका देते हैं, जब जीवन का भार और उनकी चिंताएँ हमारे सिर पर पड़ती हैं; तो ऐसे पवित्र संस्कार पर हमको गाम्भीर्य से काम लेना चाहिए। यह कितनी निर्दयता है कि जिस समय हमारा आत्मीय युवक ऐसा कठिन व्रत धारण कर रहा हो, उस समय हम आनन्दोत्सव मनाने बैठें। वह इस गुरुतर भार से दबा जाता हो और हम नाच–रंग में मस्त हों। अगर दुर्भाग्य से आजकल यही उलटी प्रथा चल पड़ी है, तो क्या आवश्यक है कि हम भी उसी लकीर पर चलें ? शिक्षा का कम–से–कम इतना प्रभाव तो होना चाहिए कि धार्मिक विषयों में हम मूर्खों की प्रसन्नता को प्रधान न समझें।

(ख) हम तकदीर के खिलौने हैं, विधाता नहीं। वह हमें अपने इच्छानुसार नचाया करती है। तुम्हें क्या मालूम है कि जिसके लिए तुम सत्यासत्य में विवेक नहीं करते, पुण्य और पाप को समान समझते हो, वह उस शुभ मुहूर्त तक सभी विघ्न–बाधाओं से सुरक्षित रहेगा ? संभव है कि ठीक उस समय जब जायदाद पर उसका नाम चढ़ाया जा रहा हो एक फुंसी उसका तमाम कर दे। यह न समझों कि मैं तुम्हारा बुरा चेत रहा हूँ। तुम्हें आशाओं की असारता का केवल एक स्वरूप दिखाना चाहता हूँ। मैंने तकदीर की कितनी ही लीलाएँ देखी हैं और स्वयं उसका सताया हुआ हूँ। उसे अपनी शुभ कल्पनाओं के साँचे में ढालना हमारी सामर्थ्य से बाहर है।

(ग) जिसके सिर पर नित्य नंगी तलवार लटकती हो, उसे शांति कहाँ। अंधेर तो यह है कि मुझे चुप भी नहीं रहने दिया जाता। कितना कहती थी कि मुझे इस बहस में न घसीटिए, इन काँटों में न दौड़ाइए, पर न माना। अब जो मेरे पैरों में काँटे चुभ गए, दर्द से कराहती हूँ, तो कानों पर उंगली रखते हैं। मुझे रोने की स्वाधीनता भी नहीं। जबर मारे और रोने न दें। आठ दिन गुजर गए बात भी न पूछी कि मरती हो या जीती। बिल्कुल उसी तरह पड़ी हूँ जैसे कोई सराय हो। इससे तो कहीं अच्छा था कि मर जाती। सुख गया, आराम गया, पल्ले क्या पड़ा, रोना और झींकना। जब यही दशा है, तो कब तक निभेगी, बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी ? दोनों के दिल एक दूसरे से फिर जाएँगे, कोई किसी की सूरत भी न देखना चाहेगा।

(घ) अगर मेरी जबान में इतनी ताकत होती कि सारे देश में उसकी आवाज पहुँचती, तो मैं सब स्त्रियों से कहती–बहनों, किसी सम्मिलित परिवार में विवाह मत करना और अगर करना तो जब तक अपना घर अलग न बना लो, चैन की नींद मत सोना। यह मत समझो कि तुम्हारे पति के पीछे उस घर में तुम्हारा मान के साथ पालन होगा। अगर तुम्हारे पुरुष ने कोई तरका नहीं छोड़ा, तो तुम अकेली रहो चाहे परिवार में, एक ही बात है। तुम अपमान और मजदूरी से नहीं बच सकतीं। अगर तुम्हारे पुरुष ने

कुछ छोड़ा है तो अकेली रहकर तुम उसे भोग सकती हो, परिवार में रहकर तुम्हें उससे हाथ धोना पड़ेगा। परिवार तुम्हारे लिए फूलों की सेज नहीं, काटों की शय्या है, तुम्हारा पार लगाने वाली नौका नहीं, तुम्हें निगल जाने वाला जंतु।

2. 'सेवासदन' में चित्रित विवाह संस्था और उसकी अन्य समस्याओं पर विचार कीजिए। 10

3. प्रेमशंकर की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। 10

4. रंगभूमि की मूल समस्या को विश्लेषित कीजिए। 10

5. 'गबन' में चित्रित राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : $5 \times 4 = 20$
   (क) गबन में चित्रित मध्यवर्ग
   (ख) 'सेवासदन' शीर्षक की सार्थकता
   (ग) 'रंगभूमि' की भाषा
   (घ) प्रेमचंद की साहित्यिक मान्यताएँ